अनुगामी सेवा के उद्देश्य (Objectives of the Follow-up Service)

निर्देशन तथा परामर्श के अनुकूल व्यक्ति का स्थापन होने के उपरान्त वह अपने को कहाँ तक समायोजित करता है इसी दृष्टि से अनुगामी सेवा के मुख्य उद्देश्य अधोलिखित हैं–

(1) अनुगामी सेवा से निर्देशन तथा परामर्श सेवाओं की प्रभावशीलता का आकलन, स्थापन की अवस्था में करना।

(2) व्यक्ति अपने रोजगार या शैक्षिक कार्यों में कहाँ तक समायोजन कर सका है, इसका निरीक्षण करना।

(3) वह अपने रोजगार अथवा शैक्षिक कार्यों से कितना सन्तुष्ट है, इसका मूल्यांकन करना।

(4) व्यक्ति अपने रोजगार या शैक्षिक कार्यों में कितनी कुशलता तथा दक्षता से कार्य कर रहा है इसका पता लगाना।

(5) जिन छात्रों ने अपने शैक्षिक कार्यों को छोड़ा है या रोजगार को स्थापन के बाद छोड़ा है इसके कारणों को ज्ञात करना।

(6) कारणों के आधार पर निर्देशन, तथा परामर्श की प्रक्रिया तथा स्थापन की सेवाओं में सुधार तथा परिवर्तन करना।

(7) रोजगार तथा व्यवसाय में लागत तथा उत्पादकता की दृष्टि से कार्य कुशलता का आकलन करना।

(8) प्रशिक्षण संस्थाओं को स्थापन की अवस्था से आवश्यक कौशलों का ज्ञान होता है जिससे सुधार हेतु दिशा मिलती है।

नोट

(9) अनुगामी सेवा द्वारा शिक्षा संस्थाओं तथा प्रशिक्षण संस्थाओं को अपने पूर्व छात्रों से सम्पर्क का अवसर मिलता है वे अपने अनुभवों के आधार पर रचनात्मक सुझाव दे सकते हैं।

(10) अनुगामी सेवा द्वारा स्थापन करने वाली संस्थाओं की भी अपनी व्यवस्था, कार्य प्रणाली तथा कर्मचारियों की कठिनाइयों तथा समस्याओं में सुधार को दिशा मिलती है।

(11) निर्देशन व परामर्श सेवाओं तथा स्थापन सेवाओं को सुधार हेतु पृष्ठपोषण मिलता है।

अनुगामी सेवा के प्रकार (Types of Follow-up Service)

उद्देश्य तथा अनुगामी सेवा के अर्थों से ही इसके प्रकार का बोध होता है। अनुगामी सेवा प्रमुख रूप से तीन प्रकार की है–

(1) शैक्षिक निर्देशन के अनुसार विद्यालयों में विशिष्ट विषयों का अध्ययन करने वाले छात्रों का अध्ययन करना।

(2) व्यावसायिक निर्देशन के अनुरूप रोजगार में स्थापन होने वाले व्यक्तियों का अध्ययन करना।

(3) परामर्श के अनुरूप कार्यरत व्यक्ति के समायोजन का अध्ययन करना।

इसके अतिरिक्त अनुगामी सेवा के अन्तर्गत प्रशिक्षण संस्थाओं में अध्ययन करने वाले छात्रों का अनुगामी अध्ययन किया है। इन अध्ययनों से छात्रों तथा व्यक्तियों की कार्य कुशलता, समायोजन तथा सन्तुष्टि का पता लगाया जाता है। यदि अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं है तब कारण जानने के लिए स्थापन की परिस्थिति की उपयुक्तता का अध्ययन करते हैं। छात्रों की क्षमताओं तथा योग्यताओं का मेल मिलाना कार्यकुशलता तथा समायोजन से क्यों नहीं हो पा रहा है इसका कारण ज्ञात करके निर्देशन तथा परामर्श की प्रक्रिया में सुधार एवं परिवर्तन किया जाता है।

अनुगामी अध्ययनों की भी व्यवस्था की जाती है जैसे–

(1) विद्यालय तथा महाविद्यालय की शिक्षा–पूर्ण करने वाले छात्रों का अनुगामी अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार के अध्ययनों के अन्तर्गत कई व्यक्ति सामूहिक रूप में कार्य करते हैं एक व्यक्ति द्वारा सम्भव नहीं होता है। अनुगामी अध्ययन के लिए नियोजन करना होता है जिसमें नेतृत्व, तत्परता तथा प्रक्रिया व प्रविधियों को सुनिश्चित किया जाता है। एकल अध्ययन तथा अनुगामी अध्ययन में कुछ समानता प्रतीत होती है परन्तु मुख्य अन्तर उद्देश्य का है। एकल अध्ययन से निदान किया जाता है। जबकि अनुगामी अध्ययन में कार्यकुशलता तथा समायोजन का मूल्यांकन किया जाता है। अनुगामी अध्ययन से प्राप्त सूचनाओं का आलेख तैयार किया जाता है इसमें निरन्तरता होनी आवश्यक है जिससे विकास की प्रवृत्ति का बोध होता है।

(2) विद्यालय तथा महविद्यालयों में अध्ययन कर रहे छात्रों के लिए अनुगामी अध्ययन–एक कक्षा से दूसरी कक्षा में या एक विद्यालय से दूसरे विद्यालय में जाने वाले छात्रों का निरन्तर अनुगामी अध्ययन करने पर विशेष बल देना चाहिए क्योंकि छात्रों को जो शैक्षिक, वैयक्तिक या व्यावसायिक निर्देशन दिया जाता है उसके बारे में यह पता लगाना आवश्यक है कि वह छात्रों को उपयोगी सिद्ध हुआ या नहीं अनुगामी सेवा प्रदान करते समय परामर्शदाता को निम्नलिखित पर अपनी दृष्टि रखनी चाहिए।

(1) आज विद्यालय में नवीनीकरण की क्रियायें नवीन विद्यालय में अधिक से अधिक समायोजित होने में कहाँ तक छात्रों को तैयार करती है?

(2) छात्र अपनी योग्यता स्तर के अनुसार किस सीमा तक वाचन करते हैं?

(3) अपनी वर्तमान परिस्थिति में छात्र अपने समायोजन में किस सीमा तक सफल हो सका?

(4) छात्र किस सीमा तक परामर्श सेवा का उपयोग करते हैं?

(5) छात्र के विद्यालय छोड़ने से सम्बन्धित क्या कारण हैं?

(6) सामूहिक विधियाँ किस सीमा तक अपने लक्ष्यों की प्राप्ति में सफल हो रही हैं।

(7) परामर्शदाता द्वारा दिए गए सुझावों पर कहाँ तक क्रियान्वयन किया है?

इन छात्रों के अनुगामी अध्ययन के लिए भी वही विधि उपयोग में लानी चाहिए जिसका वर्णन पूर्व छात्रों की अनुगामी सेवा में किया गया है। यह आवश्यक है कि समिति के समान सदस्यों में उत्साह हो और वह सहयोग की भावना से ओत-प्रोत हों।

(3) प्रशिक्षण और परामर्श सेवाओं का अनुगामी अध्ययन–सामान्य स्थापन के बाद अनुगामी सेवा की आवश्यकता होती है। इसका स्वरूप मूल्यांकन, आकलन एवं निदानात्मक होता है। मुख्य उद्देश्य व्यवसाय में समायोजन, कार्य कुशलता एवं सन्तुष्टि का आकलन करना होता है। जिससे प्रशिक्षण और परामर्श सेवाओं की प्रभावशीलता का बोध होता है। अनुगामी अध्ययन निम्नलिखित कई प्रकार से की जा सकती है।

(1) नवनियुक्त व्यक्ति तथा उसके शैक्षिक अथवा व्यवसायिक संस्थान के अधिकारियों से साक्षात्कार के माध्यम से समायोजन सम्बन्धी आवश्यकताओं के सम्बन्ध में व्यापक जानकारी प्राप्त की जाती है। उसके अतिरिक्त दूरभाषा के माध्यम से भी बारे में कतिपय सूचनाएँ प्राप्त की जाती हैं।

(2) प्रतिक्रिया तथा अनुमति के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने हेतु मतावली व प्रश्नावली का प्रयोग किया जाता है, जिससे नियोक्ता की नव-नियुक्त व्यक्ति के बारे में अनुमति का गहन एवं ठोस रूप में मूल्यांकन किया जा सके।

(3) व्यक्ति की नियुक्ति जिस संस्था में की गई है, उस संस्था में जाकर एक समूह अथवा विशिष्ट व्यक्ति के द्वारा किए गये अवलोकन के आधार पर नव नियुक्त व्यक्ति के बारे में वांछनीय आधार सामग्री का संकलन किया जाता है, जिससे उस व्यक्ति के समायोजन, योगदान तथा लगन इत्यादि के सम्बन्ध में विश्वसनीय रूप से कुछ कहा जा सके।

(4) अभिवृत्ति मापनी के द्वारा नवनियुक्त कर्मचारी की अपने व्यवसाय तथा प्रशिक्षण के सम्बन्ध में विकसित अभिवृत्ति को ज्ञात किया जाता है।

(5) अनुगामी सेवा को समुचित रूप से संगठित करने हेतु यह आवश्यक है कि नियोक्ताओं एवं व्यक्ति से प्राप्त सूचनाओं, आधार-सामग्रियों एवं अन्य तथ्यों का विश्लेषण एवं मूल्यांकन एक विशेष योजना के अनुसार किया जाये। इस प्रक्रिया को ठोस रूप प्रदान करने के लिए एक 'अनुगामी सेवा केन्द्र' की स्थापना करनी पड़ती है। इस केन्द्र का यह भी उत्तरदायित्व होता है कि व्यक्ति की समायोजन की क्षमताएँ में वृद्धि करने के लिए उपयुक्त प्रकार के शोधों का पूर्ण करें।

टास्क स्थापन सेवाओं का मापन किस सेवा द्वारा किया जाता है?

अनुगामी अध्ययन हेतु प्रविधियाँ (Techniques of Follow-up Studies)

अनुगामी अध्ययन हेतु प्रविधियों का उल्लेख करना सम्भव नहीं क्योंकि प्रविधियाँ अध्ययन की प्रकृति पर निर्भर करतीहै तथा अध्ययन के उद्देश्यों द्वारा ही निर्धारण किया जा सकता है। प्रविधियों का उल्लेख अध्ययन के अनुसार किया गया है–

(1) शैक्षिक निर्देशन के उपरान्त अध्ययन कार्यों के लिए आवश्यक प्रविधियाँ है–शैक्षिक परिलब्धि परीक्षण, निरीक्षण, साक्षात्कार शिक्षक की रेटिंग तथा परीक्षा परिणाम, छात्र की विद्यालय के शैक्षिक कार्यों में भागीदारी तथा साक्षात्कार आदि,

(2) व्यवसायिक निर्देशन अथवा स्थापन की परिस्थिति के अध्ययन हेतु आवश्यक प्रविधियों–कार्य कुशलता के रेटिंग, उत्पादकता का मानदण्ड, समायोजन अनुसूची, रोजगार सन्तुष्टि अनुसूची, साक्षात्कार, अभिवृत्ति अनुसूची, निरीक्षण, प्रश्नावली आदि,

नोट

(3) प्रशिक्षण में तथा उसके उपरान्त अध्ययन हेतु प्रविधियों-कार्य कुशलता हेतु रेटिंग, समायोजन अनुसूची, सन्तुष्टि अनुसूची, साक्षात्कार, प्रश्नावली तथा चैकलिस्ट, निरीक्षण तथा सफलता,

(4) अपेक्षित परिणाम प्राप्त न होने पर निदानात्मक परीक्षण भी दिए जाते हैं जिसमें बुद्धि परीक्षण, प्रवणता परीक्षण तथा शैक्षिक परीक्षणों का पुनः प्रयोग किया जाता है।

विद्यालयों में अनुगामी अध्ययन हेतु प्रक्रिया (Procedures of Follow-up Studies in Schools)

डावनिंग ने विद्यालयों में अनुगामी अध्ययन के कुछ कार्यक्रमों के लिए सुझाव दिए है उनमें से प्रमुख कार्यक्रम इस प्रकार है–

(1) पूर्व छात्रों का सर्वेक्षण इसके लिए पूर्व छात्रों की सभा का आयोजन किया जाए और सामूहिक सम्मेलन की व्यवस्था करके अधिकांश रचनाएँ प्राप्त हो सकती है।

(2) अध्ययनरत छात्रों का सर्वोक्षण एवं साक्षात्कार इसके अतिरिक्त संचयी आलेख के अवलोकन से भी छात्रों की सफलता का बोध होता है। निदानात्मक कार्यक्रम भी व्यवस्था की जा सकती है।

(3) अध्यापकों की सभा की व्यवस्था द्वारा कार्य प्रणाली तथा छात्रों की सफलताओं तथा कठिनाइयों के सम्बन्ध में सूचनाएँ एकत्रित की जा सकी है। कार्य-प्रणाली में सुधार किया जा सकता है। छात्र के लिए अध्ययन का वातावरण अनुकूल होना आवश्यक होता है। विद्यालय की भी समस्याओं को भी प्रस्तुत किया जा सकता है।

(4) अभिभावकों की सभा की व्यवस्था द्वारा छात्रों में अध्ययन में रुचि तथा अध्ययन प्रवृत्ति की भी जानकारी प्राप्त की जाती है। छात्र के सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी अभिभावकों से प्राप्त होती है। उनके अध्ययन सम्बन्धी कठिनाई का भी ज्ञान होता है। जिससे व्यवस्था एवं कार्य प्रणाली में सुधार किया जा सकता है।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि विशेष रूप से मूल्यांकन तथा पृष्ठ पोषण या पुनर्बलन करने हेतु अनुगामी सेवा का उपयोग किया जाता है। अनुगामी सेवा, समायोजन के प्रति संवेदना एवं समीक्षा की आवश्यकता के बारे में जागरूकता उत्पन्न करती है, परिणामस्वरूप शैक्षिक, व्यवसायिक एवं वैयक्तिक निर्देशनों के कार्यक्रमों के उद्देश्यों की प्रभावशीलता के बारे में समय पर जानकारी प्राप्त की जाती है।

अनुगामी सेवा की विशेषताएँ तथा सीमाएँ (Advantages and Limitations of Follow-up Service)

स्थापन सेवा के मूल्यांकन में अनुगामी सेवा महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करती है। शैक्षिक, व्यावसायिक या स्थापन में छात्रों को सहायता प्रदान करना विद्यालय का ही उत्तरदायित्व है। छात्र अपने अनुभवों के आधार पर अवसरों का जो बुद्धिमत्तापूर्ण चयन करते हैं वह कहाँ तक प्रभावशाली है इसका पता लगाना भी आवश्यक होता है। यदि छात्र ने अपने निर्णय में त्रुटि की है तो शीघ्र ही उस त्रुटि का पता लगाने तथा शुद्ध करने के लिए शीघ्र कदम उठाना परामर्शदाता का उत्तरदायित्व है। अनुगामी सेवा चुनाव की सार्थकता पता लगाने में सहायक होती है और इस प्रकार छात्रों के द्वारा किए गये गलत चुनाव को सुधारने के प्रयास किए जा सकते हैं और इस सेवा के द्वारा अर्जित अनुभव एवं सूझ के आधार पर परामर्शदाता ऐसी त्रुटियाँ न करने में छात्रों की सहायता कर सकता है।

अनुगामी सेवा को निर्देशन कार्यक्रम में जो महत्वपूर्ण स्थान मिलना चाहिए वह नहीं मिल पा रहा है। यहाँ तक कि संयुक्त राज्य अमरीका में भी अनुगामी सेवा का गठन बहुत कम विद्यालय में किया गया है जो कि निर्देशन कार्यक्रम का जन्म-स्थान माना जाता है और यहाँ निर्देशन कार्य बड़े व्यापक स्तर पर चलता है। *जार्ज ई. मायर्स* ने भी अपने एक लेख में अनुगामी क्रिया को निर्देशित परिवार का सौतेला बेटा कहा है। (Follow-up is the step child of the guidance family)। भारत में तो शायद ही किसी विद्यालय में इस क्रिया को प्रारम्भ करने के प्रयत्न किए गए हों। जबकि भारत जैसे देश के लिए इस सेवा का अधिक महत्व है क्योंकि यहाँ शिक्षा के क्षेत्र में अनेक नवीन प्रयोग चल रहे हैं। कभी शिक्षा संगठन के रूप में परिवर्तन होता है तो कभी पाठ्यक्रम का रूप बदल जाता है। अनेक नवीन पाठ्य-विषय पाठ्यक्रम में सम्मिलित किए जा रहे हैं। दूसरी ओर व्यवसायों के प्रकार एवं रूपों में औद्योगिक एवं आर्थिक